Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 06, (नवंबर, 2025)
पृष्ठ संख्या 46–47

मसूर की वैज्ञानिक खेती

विश्वनाथ प्रताप यादव, अविनाश कुमार राय एवं सजीव राव
विषय वस्तु विशेषज्ञ (पशु चिकित्सा)
विषय वस्तु विशेषज्ञ (मृदा विज्ञान)
विषय वस्तु विशेषज्ञ (गृह विज्ञान), कृषि विज्ञान केन्द्र, सोनभद्र, उ0प्र0
आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, भारत।
Email Id: – kvksonbhadra@gmail.com

मसूर की बुवाई रबी में अक्टूबर से दिसम्बर तक होती है परन्तु अधिक उपज के लिए मध्य अक्टूबर से मध्य नवम्बर का समय बुवाई के लिए काफी उपयुक्त है। मसूर की खेती के लिए हल्की दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त रहती है।

खेत की तैयारी

मसूर की खेती करने से पहले खेत को अच्छी तरह से तैयार कर लें, जिससे मिट्टी भुरभुरी व नरम हो जाए। प्रत्येक जुताई के बाद पाटा चला कर मिट्टी बारीक और समतल कर लें।

नवीनतम किस्में

वी एल– 125, पन्त मसूर–12 (पी एल–245), आई पी एल– 220, केएल बी–303, आई पी एल– 406, एपीएल–7 और पूसा अगेती मसूर (एल 4717) आदि किस्में शामिल हैं।

कुछ महत्वपूर्ण नई किस्में:

1. पंत मसूर 12 (पीएल 245): यह एक खुली परागित किस्म है और इसे उत्तराखंड में बिक्री के लिए अनुशंसित किया गया है। भारत सरकार ने केंद्रीय बीज समिति की सलाह पर इसे जारी किया है।

2.पूसा अगेती मसूर (एल 4717): यह एक अति शीघ्र पकने वाली किस्म है जिसे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। इसमें आयरन और जिंक की मात्रा अधिक है। यह मध्य क्षेत्रों (जैसे उत्तर प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़) के लिए उपयुक्त है और पारंपरिक किस्मों की तुलना में अधिक उपज देती है।

3.IPL 220–

मसूर की एक बायोफोर्टिफाइड (पौष्टिकता से भरपूर) किस्म है जिसे भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर ने रबी मौसम के लिए विकसित किया है।

यह किस्म 14–18 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की उपज देती है और 119–122 दिनों में पककर तैयार हो जाती है।

इस किस्म को आयरन और जिंक जैसे पोषक तत्वों से समृद्ध किया गया है, जो सामान्य मसूर किस्मों की तुलना में अधिक होते हैं।

4.वीएल–125 (टस–125)–

मसूर की एक उन्नत काली मसूर की किस्म है, जिसे वीएल मसूर 125 भी कहा जाता है।

यह किस्म 150–160 दिनों में पककर तैयार हो जाती है और इसकी उपज क्षमता लगभग 26–30.0 क्विंटल प्रति हेक्टेयर) होती है।

यह भूरे या लाल रंग के दानों वाली मसूर की सामान्य प्रजातियों से अलग है और इसके दाने काले होते हैं।

उर्वरक

सिंचित अवस्था में 22 किलोग्राम नत्रजन, 39 किलोग्राम सल्फर, 23 किलोग्राम पोटाश व 19 किलोग्राम सल्फर प्रति हेक्टेयर की दर से बीज बोआई करते समय डालना चाहिए। फास्फोरस को सिंगल सुपर फास्फेट के रूप में देने से आवश्यक सल्फर तत्त्व की पूर्ति भी हो जाती है।

सिंचाई

मसूर में सूखा सहन करने की क्षमता होती है। आमतौर पर सिंचाई नहीं की जाती है, फिर भी सिंचित क्षेत्रों में 1 से 2 सिंचाई करने से उपज में वृद्धि होती है। इसलिए खेत में जल निकास का उत्तम प्रबन्ध होना आवश्यक है।

खरपतवार नियंत्रण

मसूर की फसल में खरपतवारों द्वारा अधिक हानि होती है। यदि समय पर खरपतवार नियंत्रण पर ध्यान नहीं दिया गया, तो उपज में 25 से 30 फीसदी तक की कमी आ सकती है। इसलिए 40 से 55 दिन अंतर में खरपतवार निकालने का कार्य करते रहना चाहिए।

कटाई

मसूर की फसल 115 से 145 दिन में पक जाती है। बोने के समय के अनुसार मसूर की फसल की कटाई फरवरी व मार्च महीने में की जाती है। जब 65 से 75 प्रतिशत फलियां भूरे रंग की हो जाएं और पौधे पीले पड़ने लगें या पक जाएं तो फसल की कटाई करनी चाहिए।

पैदावार

मौसम अनुकूल हो और आधुनिक तरीके से इसकी उन्नत खेती की जाए तो अच्छा उत्पादन मिलता है। मसूर दानों की उपज 15 से 22 क्विंटल और भूसे की उपज 28 से 34 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक प्राप्त की जा सकती है।